MAKTABA TUL MADINA

YOUME TA'TIL AE'TIKAF (HINDI)

जै़ली ह़ल्क़े के 12 मदनी कामों में से सातवां मदनी काम

यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़

الصلوٰۃ والسلام علیک یا رسول اللہ
وعلیٰ اٰلک واصحابک یا حبیب اللہ

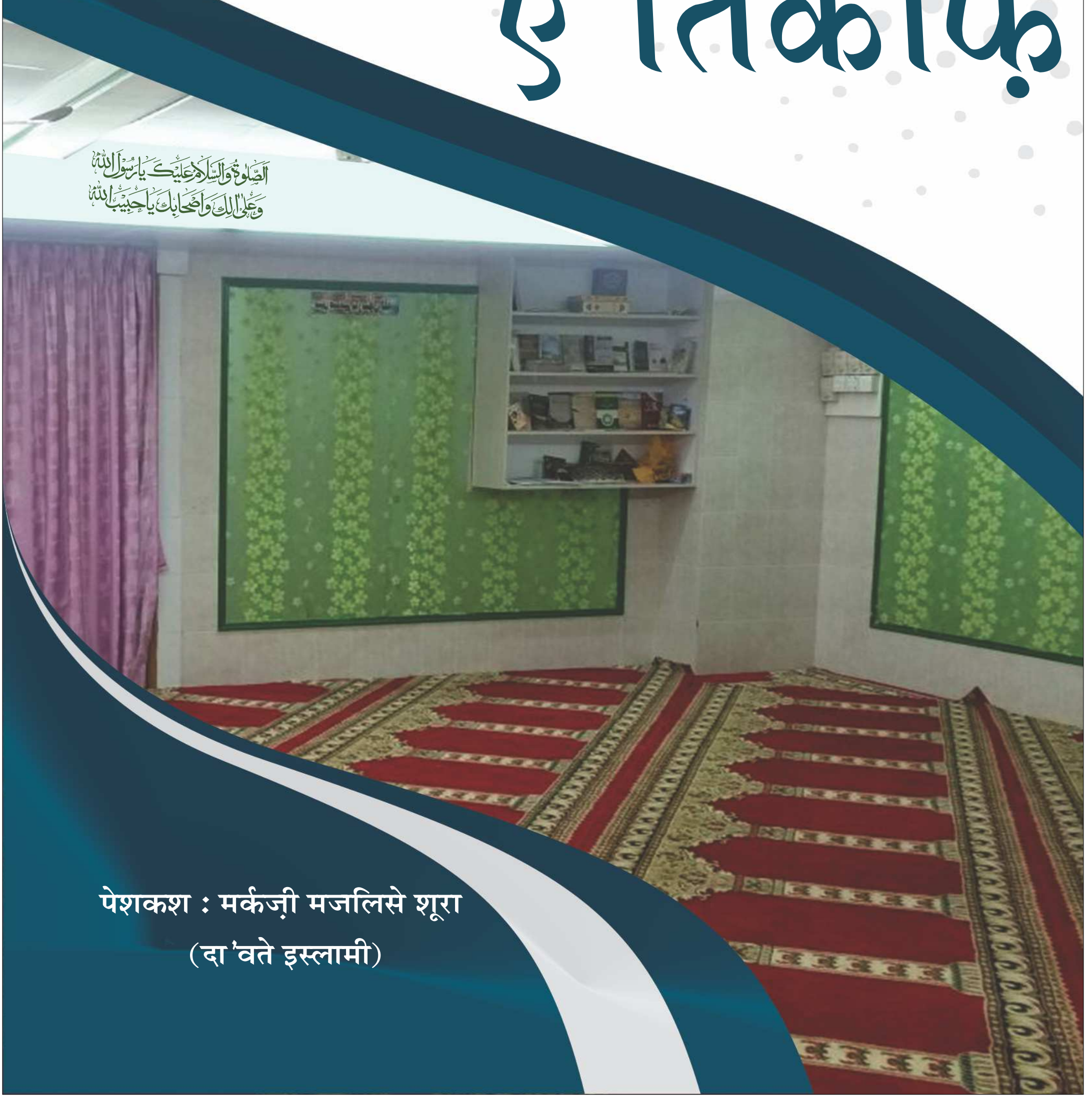

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

ता़लिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है । मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है ।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए़ इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये ।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं !!!

राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = یُ	ू = وُ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

यौमे ता'ती़ल ए'तिकाफ़

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे खुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि **अल्लाह** पाक ने जन्नत में एक दरख़्त पैदा फ़रमाया है जिस का फल सेब से बड़ा, अनार से छोटा, मख्खन से नर्म, शहद से भी मीठा और मुश्क से भी ज़ियादा खुश्बूदार है, इस दरख़्त की शाखें तर मोतियों की, तने सोने और पत्ते ज़बरजद के हैं। इस का फल वोही खा सकेगा जो कसरत से सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा।(1)

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़्लिस क्या मोल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है (2)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अस्लाफ़ और तब्लीग़े इल्मे दीन

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अह़मद बिन ज़ैनी दह़लान मक्की शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه तेरहवीं (13 वीं) सदी हिजरी के जलीलुल क़द्र फ़क़ीह, अ़ज़ीमुल मर्तबत आ़लिम, मुअर्रिख़ और मुफ़्तिये मक्का थे। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का शुमार आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

[1]......الحاوی للفتاوٰی للسیوطی، کتاب الادب و الرقائق، مجموع الاسئلة الناجية، ص ٢٤٧

[2].....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 186

के इलावा कई जय्यिद उलमाए किराम के असातिज़ा में होता है। आप ने मक्कतुल मुकर्रमा में इल्मे दीन की तरवीजो इशाअ़त में जो किरदार अदा किया वोह अपनी मिसाल आप है, आप ने जिस बुलन्द हिम्मती से इल्म की दौलत हासिल की उसे ख़र्च करने में भी बुख़्ल से काम न लिया, बल्कि हमेशा फ़राख़ दिली का मुज़ाहरा किया और हर लम्हा शरीअ़ते मुतह्हरा की हिमायत व नुस्रत और इशाअ़त पर कमरबस्ता रहे, येही नहीं बल्कि इल्मे दीन से ग़फ़्लत बरतने वालों को दीनो दुन्या की नफ़्अ़ मन्द बातें सिखाने को अपना मक़्सदे ह़यात बना लिया। चुनान्चे, इस मक़्सद की तक्मील के लिये आप ने जो लाइह़ए अ़मल इख़्तियार किया, उस की चन्द झलकियां मुलाहज़ा हों :

❀ आप ने अपने इरादत मन्दों और त़ालिबे इल्मों की तरबियत का एक ऐसा आ'ला निज़ाम क़ाइम किया कि जहां आप उन्हें ज़ेवरे इल्म से आरास्ता करते, वहीं उन्हें हर त़रह़ की दुन्यावी आलाइशों (या'नी मैल कुचैल, गन्दगी) और बुराइयों से भी दूर रहने की तरबियत देते।

❀ अगर उन में से किसी को किसी ख़ास सलाहिय्यत का हामिल पाते तो उसे दूसरों को सिखाने और उन की तरबियत करने की ज़िम्मेदारी अ़त़ा फ़रमाते। यूं चराग़ से चराग़ जलता गया और बहुत कम अ़र्से में मस्जिदे ह़राम आप के शागिर्दों और शागिर्दों के शागिर्दों से भर गई गोया हर त़रफ़ इल्म की रौशनी फैल गई।

❀ जब आप ने मक्कतुल मुकर्रमा में हर त़रफ़ इल्म के समुन्दर को मोजज़न मुलाहज़ा फ़रमाया तो अत़राफ़ व मुज़ाफ़ात को भी इस सआ़दत का ह़क़दार बनाने के लिये ख़ास तवज्जोह दी।

❀ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत के लिये मक्कतुल मुकर्रमा के अत्राफ़ में न सिर्फ़ खुद तशरीफ़ ले जाते बल्कि अपने शागिर्दों को भी भेज कर नेकी की दा'वत को आ़म करने की सई फ़रमाते। यहां तक कि एक मरतबा इस मक्सद के हुसूल के लिये आप ने ताइफ़ और अत्राफ़ की बस्तियों की त़रफ़ सफ़र इख़्तियार फ़रमाया तो आप के साथ त़लबा और उ़लमाए किराम की भी कसीर ता'दाद मौजूद थी।

❀ अत्राफ़ व मुज़ाफ़ात में आप के मदनी दौरे का अन्दाज़ येह था कि जब किसी अ़लाके़ में तशरीफ़ ले जाते तो वहां बसने वाले क़बाइल के पास जा कर उन्हें **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअ़त की तरग़ीब दिलाते और उन के अ़क़ाइदो आ'माल में से जो कमी पाते उसे दूर करने की कोशिश फ़रमाते, नीज़ उन्हें अ़क़ाइदो आ'माल में से हर वोह बात सिखाते जिस की उन्हें ज़रूरत होती।

❀ लोगों के साथ इस क़दर शफ़्क़त व महब्बत से पेश आते कि जब एक गाऊं से जाने का इरादा ज़ाहिर फ़रमाते तो दूसरे गाऊं वाले आ हाज़िर होते, जो न सिर्फ़ आप का अपने अ़लाके़ में भरपूर इस्तिक़्बाल करते बल्कि आप उन्हें जो कहते वोह उसे तवज्जोह से सुनते और जो हुक्म देते वोह उस पर अ़मल भी करते।

❀ आप अत्राफ़ व मुज़ाफ़ात में जब सफ़र फ़रमाते तो वहां के मालदारों पर भी खुसूसी तवज्जोह देते और उन्हें तहाइफ़ वगै़रा से भी नवाज़ते और ऐसा आप कोई दुन्यावी ग़रज़ पूरा करने के लिये न करते बल्कि इस लिये करते ताकि वोह लोग भी आप के मक्सद को पूरा करने या'नी फ़रोगे़ इल्मे दीन के सिलसिले में आप की मदद करें।

❀ अगर कोई आप की ख़िदमत में माले कसीर पेश करता तो आप उसे क़बूल फ़रमा कर वोह माल उन्हें ही अ़ता फ़रमा देते और साथ येह हुक्म इरशाद फ़रमाते कि वोह वहां मस्जिद ता'मीर करें और इस काम में खुद भी उन की माली मदद फ़रमाते।

❀ जब मस्जिद की ता'मीर मुकम्मल हो जाती तो वहां किसी मुफ़्ती (फ़क़ीह) का तक़र्रुर फ़रमा देते ताकि इस के ज़रीए लोगों में इ़ल्मे दीन को आ़म किया जाए। यूं तक़रीबन 60 मक़ामात पर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रफ़ से एक फ़क़ीह मुक़र्रर थे जो वहां लोगों को न सिर्फ़ बा जमाअ़त नमाज़ें पढ़ाते बल्कि नमाज़, रोज़ा, ज़कात और ह़ज वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ ज़रूरी दीनी मसाइल भी सिखाया करते।

❀ उन मुफ़्तियाने किराम के अख़राजात की भी आप अपनी जेब से तरकीब बनाया करते, यहां तक कि इस के लिये आप को एक बहुत बड़ी रक़म उधार भी लेना पड़ी, मगर आप ने इशाअ़ते इ़ल्मे दीन से मुंह न मोड़ा और बिल आख़िर हुकूमते वक़्त ने आप की इन ख़िदमात को सराहते हुए इन तमाम मुफ़्तियाने किराम के माहाना मुशाहरे की मुनासिब तरकीब की ज़मानत ले ली।

❀ अत़राफ़ व मुज़ाफ़ात में आप ने जो बीज बोया था उस के समरात जल्द ही नमूदार होने लगे, चुनान्चे, चन्द ही सालों के बा'द जब इन बच्चों की ता'दाद शुमार की गई जिन्हों ने ह़िफ़्ज़े क़ुरआने करीम की सआ़दत पाई थी तो येह ता'दाद 800 को पहुंच गई और ग़ैर हुफ़्फ़ाज़ की ता'दाद तो बेशुमार थी।(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(1) نفحۃ الرحمن فی مناقب مفتی مکۃ احمد زینی دحلان، ص۳۸تا۴۲ ملخصًا

अत्राफ़ गाऊं में नेकी की दा'वत देना कैसा ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि दुन्या की कसीर आबादी मुज़ाफ़ात व अत्राफ़ में रहती है और शह्री लोगों को इल्म ह़ासिल करने के जो मवाक़ेअ़ दस्तयाब हैं वोह मुज़ाफ़ात और अत्राफ़ गाऊं में बसने वालों को ह़ासिल नहीं। ह़ालांकि इस्लाम ने इल्मे दीन का हुसूल हर मुसलमान मर्द व औ़रत पर लाज़िम क़रार दिया है, ख़्वाह वोह शह्र में रहता हो या गाऊं दीहात में, इस में कोई फ़र्क़ बयान नहीं फ़रमाया। चुनान्चे, देखा आप ने कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अह़मद बिन ज़ैनी दह़लान मक्की शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने सिर्फ़ शह्र ही में नहीं, गाऊं दीहात में भी इल्म की शम्अ़ रौशन फ़रमाई, बिलाशुबा येह एक अ़ज़ीम काम है और सीरते नबवी का मुत़ालआ़ करने से मा'लूम होता है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब अ़लानिया तब्लीग़ करने का हुक्म मिला तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जहां मक्कतुल मुकर्रमा में बसने वालों को इस्लाम की दा'वत देते वहीं अत्राफ़ की बस्तियों में मुख़्तलिफ़ क़बाइले अ़रब के पास जा कर भी उन्हें नेकी की दा'वत पेश फ़रमाया करते, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बसा अवक़ात अकेले इस काम के लिये निकल पड़ते जैसा कि मरवी है कि एक मरतबा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क़बीलए किन्दा में इस मक़्सद के लिये तशरीफ़ ले गए, फिर वहां से क़बीलए कल्ब और बनू ह़नीफ़ा के लोगों को जा कर इस्लाम की दा'वत दी।[1] इसी त़रह़ ह़ज के मौसिम में जब दूर दराज़ से अ़रब क़बाइल मक्का शरीफ़ में जम्अ़ होते तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उन के पास जा कर

[1] ....سیرت ابن هشام، عرض رسول الله نفسه علی القبائل، ۲/۵۴

उन्हें इस्लाम की दा'वत दिया करते।[1] मसलन एक बार आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज के मौसिम में क़बीलए बनू सक़ीफ़ को दा'वते इस्लाम दी तो उन्हों ने क़बूल करने से इन्कार कर दिया[2] मगर जब क़बीलए औस व ख़ज़रज को दा'वते इस्लाम दी तो उन्हों ने लब्बैक कहते हुए न सिर्फ़ इस्लाम क़बूल किया बल्कि आप की नुस्रत व ताईद का वा'दा भी फ़रमाया।[3] बसा अवक़ात आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان भी होते जैसा कि क़बीलए बनू ज़ुहल बिन शैबान के हां जा कर जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस के सरदार **मफ़रूक़** को नेकी की दा'वत पेश की तो ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه भी आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह थे।[4] इसी त़रह़ सफ़रे त़ाइफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन साबित رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हमराह थे।[5]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा तमाम मिसालें अगर्चे हिजरत से पहले की हैं मगर ऐसा भी नहीं कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अत़राफ़ गाऊं में जा कर नेकी की दा'वत पेश करने का सिलसिला हिजरत के बा'द तर्क फ़रमा दिया हो, अलबत्ता ! येह ज़रूर हुवा कि इस में कुछ कमी आ गई मगर येह सिलसिला आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मौक़ूफ़ न फ़रमाया, मसलन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا

[1]......شرح الزرقانی علی المواهب، ذکر عرض المصطفی نفسه علی...الخ، ۲/۷۳ ملتقطًا ومفهومًا

[2]......خصائص کبریٰ، باب ما وقع فی عرضه نفسه علی القبائل من الآیات، ۱/۳۰۰

[3]......شرح الزرقانی علی المواهب، ذکر عرض المصطفی نفسه علی...الخ، ۲/۷۳

[4].....सीरते मुस्त़फ़ा, स. 148 ब तसर्रुफ़।

[5]......شرح الزرقانی علی المواهب، خروجه الی الطائف، ۲/۷۳ ملتقطًا

से मरवी है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर हफ़्ते मस्जिदे क़ुबा में (कभी) पैदल और (कभी) सुवार हो कर तशरीफ़ ले जाते[1] और ऐसा कैसे मुमकिन है कि मुअ़ल्लिमे काएनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने उ़श्शाक़ के हां तशरीफ़ ले जाएं मगर उन्हें वा'ज़ो नसीहत के मदनी फूल इरशाद न फ़रमाएं ।

जिन्नों के क़बाइल में तब्लीग़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **अल्लाह** पाक के ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चूंकि रहती दुन्या तक के लिये तमाम मख़्लूक़ात के पैग़म्बर हैं, लिहाज़ा येह कैसे मुमकिन था कि इन्सान तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के करम से फ़ैज़याब होते मगर जिन्नात जो इन्सानों से भी ता'दाद में ज़ियादा हैं वोह आप की रह़मत से अपना ह़िस्सा पाने से मह़रूम रह जाते । चुनान्चे, मुख़्तलिफ़ रिवायात से येह साबित है कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जिन्नात के हां जा कर उन्हें इस्लामी ता'लीमात से मुनव्वर फ़रमाया । जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें मस्जिदे नबवी शरीफ़ में नमाज़ पढ़ाई, फिर हमारी जानिब मुतवज्जेह हो कर इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम में से कौन आज रात जिन्नात से मुलाक़ात के लिये मेरे साथ चलेगा ? सब ही ख़ामोश रहे किसी ने कोई जवाब न दिया, यहां तक कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने येही सुवाल तीन बार दोहराया मगर कोई जवाब न मिला तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे पास से गुज़रते हुए मेरा हाथ पकड़ा और अपने दामने

[1]......بخاری، کتاب فضل الصلاۃ فی مسجد مکۃ والمدینۃ، باب من اتی مسجد قباء کل سبت، ص ۳۴۲، حدیث: ۱۱۹۳

रह़मत में ले कर चलने लगे, त़वील सफ़र तै़ करने के बा वुजूद सरे राह कुछ मह़सूस न हुवा, हम इस क़दर दूर पहुंच गए कि मदीने के बाग़ात पीछे रह गए और मक़ामे बवार आ गया। अचानक वहां कुछ लोग नज़र आए जो नेजे़ की मानिन्द दराज़ क़द और पाउं तक लम्बे कपडे़ पहने हुए थे, उन्हें देखते ही मुझ पर हैबत त़ारी हो गई यहां तक कि मेरे क़दम ख़ौफ़ से लरज़ने लगे। फिर जब हम उन के मज़ीद क़रीब पहुंचे तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक पाउं से ज़मीन पर एक गोल दाइरा खींच कर मुझ से इरशाद फ़रमाया : इस के दरमियान बैठ जाओ। जैसे ही मैं दरमियान में बैठा सारा ख़ौफ़ जाता रहा, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मज़ीद आगे तशरीफ़ ले गए और जिन्नात पर क़ुरआने करीम की तिलावत पेश की और सुब्ह़ नमूदार होने के वक़्त वापस मेरे पास तशरीफ़ लाए और मुझे साथ चलने को फ़रमाया, मैं साथ साथ चलने लगा, इसी दौरान हम बिल्कुल अजनबी जगह पहुंच गए तो वहां सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ग़ौर करो और देखो तुम्हें पहले नज़र आने वाली चीज़ों में से क्या नज़र आ रहा है? मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं बहुत बड़ी एक जमाअ़त देख रहा हूं। तो सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते अक़्दस से ज़मीन को नर्म फ़रमा कर कुछ ले कर उन की त़रफ़ फैंका और फिर इरशाद फ़रमाया : येह क़ौमे जिन्नात का एक वफ़्द था जो राहे रास्त पर आ गया है।(1) ऐसा ही एक वाक़िआ़ मुस्लिम शरीफ़ में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से

[1] ......رياض النضرة، الباب السادس فی مناقب الزبير بن العوام، فصل السادس ذكر اختصاصه بمرافقة النبی الی وفد الجن، جزء الرابع فی مناقب، ص ۲۳۵

भी मरवी है कि वोह लैलतुल जिन्न में सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ थे ।(1)

अत़राफ़ गाऊं में इशाअ़ते इल्मे दीन और सह़ाबए किराम

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म पर बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने गाऊं गाऊं बस्ती बस्ती जा कर दा'वते इस्लाम को आ़म किया। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मदीनए मुनव्वरा भेजा तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक ही जगह तशरीफ़ फ़रमा न हुए बल्कि मदीना शरीफ़ के अत़राफ़ गाऊं में बसने वाले मुख़्तलिफ़ क़बाइल में भी जा कर ख़ूब नेकी की दा'वत आ़म फ़रमाई। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इन्ही कोशिशों का नतीजा था कि जब आप तक़रीबन 12 माह के बा'द सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए तो उस वक़्त तक़रीबन 500 और एक रिवायत के मुत़ाबिक़ 300 लोग आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ थे ।(2)

इसी त़रह़ के मज़ीद वाक़िआ़त दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 875 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **सीरते मुस्त़फ़ा** सफ़ह़ा 506 पर कुछ यूं तह़रीर हैं : हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तब्लीग़े इस्लाम के लिये तमाम अत़राफ़ व अकनाफ़ में मुबल्लिग़ीने इस्लाम और आ़मिलीन व मुजाहिदीन को भेजा करते थे। उन में से बा'ज़ क़बाइल तो मुबल्लिग़ीन के सामने ही दा'वते इस्लाम क़बूल कर के मुसलमान हो जाते थे

[1]......مسلم، کتاب الصلاۃ، باب الجھر بالقراءۃ فی الصبح...الخ، ص ۱۷۳، حدیث: ۱۵۰-(۴۵۰)

[2]......مدارج النبوت، قسم دوم، باب چہارم، قضیہ ھجرت و مبادی آں، ۲/۵۳ ملتقطًا

मगर बा'ज़ क़बाइल इस बात के ख़्वाहिश मन्द होते थे कि बराहे रास्त ख़ुद बारगाहे नबुव्वत में ह़ाज़िर हो कर अपने इस्लाम का ए'लान करें । चुनान्चे, कुछ लोग अपने अपने क़बीलों के नुमाइन्दे बन कर मदीनए मुनव्वरा आते थे और ख़ुद बानिये इस्लाम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बाने फ़ैज़ तर्जुमान से दा'वते इस्लाम का पैग़ाम सुन कर अपने इस्लाम का ए'लान करते थे और फिर अपने अपने क़बीलों में वापस जा कर पूरे क़बीले वालों को मुशर्रफ़ ब इस्लाम करते थे । इन्ही क़बाइल के नुमाइन्दों को हम **वुफ़ूदुल अ़रब** के उ़न्वान से बयान करते हैं ।

इस क़िस्म के वुफ़ूद और नुमाइन्दगाने क़बाइल मुख़्तलिफ़ ज़मानों में मदीनए मुनव्वरा आते रहे मगर फ़त्ह़े मक्का के बा'द नागहां सारे अ़रब के ख़यालात में एक अ़ज़ीम तग़य्युर वाक़ेअ़ हो गया और सब लोग इस्लाम की त़रफ़ माइल होने लगे क्यूंकि इस्लाम की ह़क़्क़ानिय्यत वाज़ेह़ और ज़ाहिर हो जाने के बा वुजूद बहुत से क़बाइल मह़ज़ क़ुरैश के दबाव और अहले मक्का के डर से इस्लाम क़बूल नहीं कर सकते थे । फ़त्ह़े मक्का ने इस रुकावट को भी दूर कर दिया और अब दा'वते इस्लाम और क़ुरआन के मुक़द्दस पैग़ाम ने घर घर पहुंच कर अपनी ह़क़्क़ानिय्यत और ए'जाज़ी तसर्रुफ़ात से सब के क़ुलूब पर सिक्का बिठा दिया । जिस का नतीजा येह हुवा कि वोही लोग जो एक लम्ह़े के लिये इस्लाम का नाम सुनना और मुसलमानों की सूरत देखना गवारा नहीं कर सकते थे आज परवानों की त़रह़ शम्ए नबुव्वत पर निसार होने लगे और जौक़ दर जौक़ बल्कि फ़ौज दर फ़ौज हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में दूरो दराज़ के सफ़र तै करते हुए वुफ़ूद की शक्ल में आने लगे और ब रिज़ाओ रग़बत इस्लाम के ह़ल्क़ा बगोश बनने लगे चूंकि इस क़िस्म के वुफ़ूद अक्सरो

बेशतर फ़त्हे मक्का के बा'द 9 हिजरी में मदीनए मुनव्वरा आए, इस लिये 9 हिजरी को लोग सनतुल वुफ़ूद (या'नी नुमाइन्दों का साल) कहने लगे।[1]

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह सिलसिला यहीं तक महदूद न रहा बल्कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द भी जारी रहा और बिल ख़ुसूस अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में मुख़्तलिफ़ ममालिक के शहरों और बस्तियों में रहने वालों तक इल्मे दीन को आ़म करने में इन्क़िलाबी इक़्दामात किये, मसलन

✿☞ शह्र ब शह्र क़रया ब क़रया मुख़्तलिफ़ मुअ़ल्लिमीन को न सिर्फ़ भेजा, बल्कि उन की तनख़्वाहें भी मुक़र्रर कीं और इस के साथ साथ येह हुक्म भी जारी किया कि हर शख़्स को कुरआने पाक सीखने में उस की कोशिश के ए'तिबार से अ़तिय्यात दिये जाएं।[2]

✿☞ इस सिलसिले में फ़क़त वहां के गवर्नरों या क़ाज़ियों पर इक्तिफ़ा न किया बल्कि मदीनए मुनव्वरा में मुक़ीम मुख़्तलिफ़ उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम को इस काम की तक्मील के लिये भेजा।[3]

✿☞ फ़त्ह होने वाले हर अ़लाक़े में जामेअ़ मसाजिद का ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाया।

✿☞ जो माले ग़नीमत तक़्सीम के बा'द बच जाता उसे कुरआने करीम की ता'लीम ह़ासिल करने वालों पर ख़र्च करने का हुक्म दिया।[4]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

[1].....सीरते मुस्तफ़ा, स. 506
[2].....फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म, 2 / 510
[3].....फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म, 2 / 513
[4].....फ़ैज़ाने फ़ारूके़ आ'ज़म, 2 / 514

बुज़ुर्गाने दीन और इशाअ़ते इल्मे दीन

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बा'द हमारे दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن ने भी इस सिलसिले को यूंही जारी रखा जैसा कि इब्तिदा में ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद ज़ैनी दह़लान मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی के बारे में बयान हुवा है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने भी बिऐ़निही वोही काम किये जो अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने अ़हदे ख़िलाफ़त में सर अन्जाम दिये थे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की त़रह़ और भी बहुत से बुज़ुर्गाने दीन ऐसे हैं, जिन्हों ने गाऊं दीहात में जा कर इल्मे दीन की शम्अ़ को ख़ूब रौशन फ़रमाया और बा'ज़ बुज़ुर्गाने दीन तो इसी ग़रज़ से घर बार छोड़ कर अत़राफ़ गाऊं में जा कर क़ियाम भी फ़रमाया करते थे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने शिहाब ज़ोहरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه दीहातियों को ज़ेवरे इल्म से आरास्ता करने की ग़रज़ से उन के हां क़ियाम किया करते थे ।(1)

इशाअ़ते इल्म के लिये गाऊं दीहात में जाना कैसा ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन किसी के ज़ेह्न में येह वस्वसा आ सकता है कि क्या इशाअ़ते इल्मे दीन के लिये किसी गाऊं दीहात में जाना ज़रूरी है ? तो आइये इस का जवाब हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه की मश्हूर किताब **एह़याउल उ़लूम** से जानते हैं, चुनान्चे, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : जब शहरों का येह ह़ाल है कि इस में रहने वाले अक्सर लोग नमाज़ की शराइत़ से ग़ाफ़िल हैं तो **गाऊं**

(1) .... حلیۃ الاولیا، ذکر طبقۃ من تابعی المدینۃ....الخ، الزھری، ۳/۴۱۲، الرقم: ۴۴۷۶

दीहात में रहने वालों का ह़ाल क्या होगा ? बहर ह़ाल शहरी हों या दीहाती लोग सब इस सूरते ह़ाल का शिकार हैं। लिहाज़ा जहां शह्र की हर मस्जिद और मह़ल्ला में एक ऐसे फ़क़ीह (या'नी मुअ़ल्लिम) का होना ज़रूरी है जो लोगों को दीन सिखाए, वहीं हर गाऊं में भी एक फ़क़ीह का होना ज़रूरी है, अलबत्ता ! हर वोह फ़क़ीह जो फ़र्ज़े ऐन की अदाएगी के बा'द फ़र्ज़े किफ़ाया के लिये फ़ारिग़ हो उस पर वाजिब है कि वोह अपने शह्र के क़ुर्बो जवार में बसने वालों के पास जाए और उन्हें दीन और शरीअ़त के फ़राइज़ सिखाए। अगर कोई एक फ़क़ीह येह काम बजा लाएगा तो बाक़ी तमाम लोगों से फ़र्ज़ साक़ित़ हो जाएगा, वरना इस का वबाल सब लोगों पर होगा, आ़लिम पर इस वज्ह से होगा कि उस ने बाहर जा कर अह़कामे शरीअ़त सिखाने में कोताही की और जाहिल पर इस वज्ह से कि उस ने सीखने में कोताही की।(1)

अत़राफ़ गाऊं और दा'वते इस्लामी

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी भी अपने अस्लाफ़ के नक़्शे क़दम पर चलते हुए गाऊं दीहात में इ़ल्म की शम्अ़ को रौशन करने का अ़ज़्म किये हुए है, चूंकि इस का मदनी मक़्सद ही येह है कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।"** اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ। लिहाज़ा इस मदनी मक़्सद की तक्मील अत़राफ़ और गाऊं दीहात के लोगों के बिग़ैर मुमकिन नहीं, येही वज्ह है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और सलफ़ सालिह़ीन (बुज़ुर्गाने दीन) رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم के त़रीक़े पर

(1) احیاء علوم الدین، کتاب الامر بالمعروف...الخ، الباب الثالث فی المنکرات...الخ، ۲/۴۱۹ملتقطًا

अ़मल करते हुए पन्दरहवीं (15 वीं) सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूहानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने शहरों में नेकी की दा'वत को ही आ़म नहीं किया बल्कि अत़राफ़ और गाऊं दीहात में बसने वालों पर भी खुसूसी तवज्जोह दी।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ अत़राफ़ गाऊं में क़ुरआने करीम पढ़ने पढ़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के तह़त कसीर ता'दाद में **मदारिसुल मदीना** क़ाइम हैं, जिन में मदनी मुन्ने और मदनी मुन्नियां ही क़ुरआने करीम की ता'लीम से आरास्ता नहीं हो रहीं बल्कि बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें भी मद्रसतुल मदीना बालिग़ान व बालिग़ात में शिर्कत की बरकत से दुरुस्त तलफ़्फ़ुज़ के साथ क़ुरआने करीम पढ़ना सीख रहे हैं। इस के इलावा आ़शिक़ाने रसूल दा'वते इस्लामी के 12 मदनी कामों की भी ख़ूब धूम मचाने में मसरूफ़ हैं, इन्ही **12 मदनी कामों** में से **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** बहुत ही अहम्मिय्यत का ह़ामिल मदनी काम है, जिस का मक़्सूद शह्र और गाऊं दीहातों / गोठों में रहने वालों तक छुट्टी के दिन नेकी की दा'वत पहुंचाना और उन्हें इ़ल्मे दीन की दौलत से माला माल करना है।

यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ क्या है ?

प्यारे इस्लामी भाइयो ! यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ 12 मदनी कामों में से सातवां और हफ़्तावार पांच मदनी कामों में से दूसरा मदनी काम है, तन्ज़ीमी त़ौर पर इस से मुराद येह है कि हर हफ़्ते छुट्टी के दिन (जुमुआ़ / इतवार) हर निगराने ह़ल्क़ा मुशावरत, निगराने अ़लाक़ा / शह्र मुशावरत के

मश्वरे से शह्‌र के अत्‌राफ़ या किसी गाऊं में जुमुआ ता अ़स्र या अ़स्र ता मग़रिब मस्जिद में ए'तिकाफ़ की तरकीब बनाएं।

यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ के चन्द मदनी फूल

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ए'तिकाफ़ की निय्यत से अल्लाह पाक की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये मस्जिद में ठहरे रहना भी एक अ़ज़ीम इ़बादत है, लिहाज़ा दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में अत्‌राफ़ या शह्‌र के नए या ऐसे अ़लाक़े जहां दा'वते इस्लामी का मदनी काम कम हो या वहां नया मदनी काम शुरूअ़ करना हो, वहां ह़स्बे मौक़अ़ (जहां जिस दिन छुट्टी हो) जुमुआ या इतवार को मस्जिद में **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** की तरकीब होती है। चुनान्चे, इस मदनी काम की मज़बूती के लिये दर्जे ज़ैल मदनी फूल मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

❀ **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** में कम अज़ कम 3 और ज़ियादा से ज़ियादा 7 शुरका हों अगर 7 से ज़ियादा इस्लामी भाई हो जाएं तो **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** की 2 मक़ामात पर तरकीब कर ली जाए।

❀ अ़लाक़ों से जो इस्लामी भाई अत्‌राफ़ या शह्‌र के नए अ़लाक़ों में **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** के लिये जाएं, उन के साथ जामिअ़तुल मदीना के त़लबए किराम को भी तन्ज़ीमी तरबियत के लिये भेजा जाए।

❀ अगर जुमुआ के दिन **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** हो तो जुमुआ से क़ब्ल भी मदनी दौरे की तरकीब की जाए।

❀ नमाज़े जुमुआ के बा'द मक़ामी लोगों के दरमियान मदनी ह़ल्क़े की तरकीब की जाए।

❀ त़लबए किराम जहां भी **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** के लिये जाएं तो उन्हें मदनी क़ाफ़िले की सूरत में भेजा जाए।

❀ **नाश्ता** जामिअ़तुल मदीना में, **दोपहर** का खाना साथ ले जाएं और **रात** का वापस आ कर खा लें।

❀ जामिअ़तुल मदीना में **12 मदनी कामों के ज़िम्मेदार और मुतअ़ल्लिक़ा निगराने मुशावरत** बाहमी मश्वरे से पेशगी ही इस का **जदवल** बना लें और इस से मुतअ़ल्लिक़ा **तमाम लवाज़िमात** (मसलन साईकल / मोटर साईकल / गाड़ी का इन्तिज़ाम / सफ़री अख़राजात वग़ैरा) **पहले से पूरे** कर लिये जाएं ताकि वक़्त की बचत के साथ साथ ज़ियादा **तन्ज़ीमी फ़वाइद** भी लिये जा सकें।

❀ शुरकाए **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** वापसी पर कारकर्दगी फ़ॉर्म ज़रूर पुर करें।

❀ हफ़्तावार **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** के लिये ह़त्तल इमकान एक ही मक़ाम रखा जाए।

❀ हर हफ़्ते छुट्टी के दिन, हर निगराने ह़ल्क़ा मुशावरत, निगराने अ़लाक़ा / शह्‌र मुशावरत के मश्वरे से शह्‌र के नए अ़लाक़ों में जुमुआ़ / ज़ोहर ता मग़रिब के बयान तक **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** की तरकीब बनाएं।

❀ **हदफ़ : फ़ी ह़ल्क़ा, शुरका :** कम अज़् कम 5 इस्लामी भाई।

❀ **नोट : यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** शह्‌र में **मदनी क़ाफ़िला मजलिस** और अत़राफ़ में **मजलिसे अत़राफ़ गाऊं** के सिपुर्द है।

यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ का जदवल

तन्ज़ीमी त़ौर पर **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** का जदवल कुछ यूं है :

❀ जदवल और ए'लानात की दोहराई और मदनी मश्वरे का ह़ल्क़ा (9 : 30 ता 10 : 00) इस ह़ल्क़े में 5 मिनट तिलावत व ना'त और बाक़ी 25 मिनट में जदवल और ए'लानात की दोहराई और मदनी मश्वरे का ह़ल्क़ा लगाया जाए, (इसी दौरान मदनी इन्आ़मात के रसाइल भी तक़्सीम किये जाएं) **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में निगरान इस्लामी भाई जदवल की दोहराई खु़द ही करे, शुरका से सिर्फ़ एक एक काम पर मदनी मश्वरा किया जाए।

❀ मदनी मक़्सद का बयान (10 : 00 ता 10 : 30) इस ह़ल्क़े में इब्तिदाई 19 मिनट अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल से बयान और आख़िरी 11 मिनट में 12 मदनी कामों में से किसी एक मदनी काम पर ज़ेहन बनाया जाए।

❀ इनफ़िरादी इ़बादत व मुख़्तसर नेकी की दा'वत का ह़ल्क़ा (10 : 30 ता 11 : 00) : (30 मिनट) इस ह़ल्क़े में तिलावते क़ुरआन, ज़िक्रुल्लाह, दुरूद शरीफ़ वग़ैरा की तरकीब बनाई जाए। इस में मुत़ालआ़ भी कर सकते हैं, इनफ़िरादी इ़बादत के बा'द निगरान इस्लामी भाई मुख़्तसर नेकी की दा'वत याद करवाए, अगर येह किसी को याद हो तो उसे इनफ़िरादी कोशिश के लिये तरग़ीबात याद करवाई जाएं।

❀ इनफ़िरादी कोशिश का ह़ल्क़ा (11 : 00 ता 12 : 00) : (12 मिनट) निगरान इस्लामी भाई इनफ़िरादी कोशिश का त़रीक़ए कार सिखाए और अ़मली त़रीक़ा कर के दिखाए, फिर इस्लामी भाई बाहर जा कर मुख़्तलिफ़ जगहों पर इनफ़िरादी कोशिश फ़रमाएं और इस्लामी भाइयों को हाथों हाथ मस्जिद में लाने की तरकीब बनाएं, इसी दौरान कुछ इस्लामी भाई मस्जिद में 12 मदनी कामों पर एक दूसरे का ज़ेहन बनाएं। इसी वक़्त में बा असर शख़्सिय्यात मसलन उ़लमा, मशाइख़, चौधरी, वडेरों वग़ैरा से मुलाक़ात कर के दा'वते

इस्लामी और इस के शो'बाजात का तआ़रुफ़ करवाएं और मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत पेश करें।

❀ **सुन्नतें और आदाब सीखने का मदनी ह़ल्क़ा** (12 : 00 ता 12 : 30) : (30 मिनट) इस ह़ल्के़ में निगरान इस्लामी भाई शुरका को सुन्नतें और आदाब सिखाने की तरकीब बनाए।

❀ **वक़्फ़ए त़आ़म व चौक दर्स** (12 : 30) : खाना खाएं और अज़ाने ज़ोहर से 12 मिनट क़ब्ल (7 मिनट) **मदनी दर्स** की तरकीब की जाए, बा'दे दर्स नमाजे़ ज़ोहर की दा'वत दे कर शुरका को अपने साथ मस्जिद में लाने की कोशिश करें।

❀ **बा'दे ज़ोहर दर्स :** (7 मिनट) मदनी दर्स दिया जाए।

❀ **नमाज़ के अह़काम का ह़ल्क़ा :** (30 मिनट) निगरान इस्लामी भाई नमाज़ के अह़काम का ह़ल्क़ा लगाएं और ह़स्बे मौक़अ़ वुज़ू का त़रीक़ा / ग़ुस्ल का त़रीक़ा / नमाजे़ जनाज़ा का त़रीक़ा / नमाज़ की शराइत़, फ़राइज़, वाजिबात, मुफ़्सिदात वग़ैरा समझाने वाले अन्दाज़ में पढ़ कर सुनाएं।

❀ **दर्सो बयान सीखने का ह़ल्क़ा :** (19 मिनट) इस ह़ल्के़ में निगरान मक़ामी नए इस्लामी भाइयों को अपने साथ बिठा कर मदनी दर्स का त़रीक़ा सिखाए।

❀ **दुआ़ओं का ह़ल्क़ा :** (19 मिनट) गर्मियों में येह ह़ल्क़ा इसी वक़्त में होगा और सर्दियों में येह ह़ल्क़ा इस वक़्त नहीं होगा।

❀ **वक़्फ़ए आराम :** ❀☞ ह़ल्क़ों के बा'द अ़स्र तक वक़्फ़ए आराम।

❀ **बा'दे अ़स्र ए'लान, बयान, मदनी दौरा :** फ़र्ज़ नमाज़ के फ़ौरन बा'द ए'लान की तरकीब हो, फिर दुआ़ के बा'द (12 मिनट) नेकी की दा'वत के फ़ज़ाइल पर बयान हो। बयान के बा'द मदनी दौरे की तरकीब की जाए।

अ़स्र ता मग़रिब दर्स : इस दौरान फ़ैज़ाने सुन्नत और बयानाते अ़त्तारिय्या वग़ैरा से दर्स दिया जाए। आख़िर में चन्द मिनट सुन्नतें और आदाब सीखने सिखाने का ह़ल्क़ा लगाया जाए।

बा'दे मग़रिब ए'लान व बयान : मग़रिब के बा'द बयान की तरकीब हो, इस के बा'द इनफ़िरादी कोशिश (12 मिनट) की जाए, जिस में मक़ामी इस्लामी भाइयों को मदनी क़ाफ़िलें में सफ़र का ज़ेह्न दें और नाम लिखें, इसी त़रह़ मक़ामी इस्लामी भाइयों को 12 मदनी कामों का ज़ेह्न दें बिल ख़ुसूस मदनी दर्स शुरूअ़ करने की ज़िम्मेदारी दें।

यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ का इख़्तिताम : जिस जगह हैं अगर वहां से घर / जामिअ़तुल मदीना क़रीब है तो वापसी की तरकीब कर लें और अगर दूर हो तो नमाज़े इशा बा जमाअ़त अदा फ़रमा कर वापसी की तरकीब बनाएं।

☞ **नोट : यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** करने वाले इस्लामी भाई जिस वक़्त मस्जिद में पहुंचें, उस वक़्त के मुत़ाबिक़ जदवल पर अ़मल फ़रमाएं।

☞ **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** में जदवल पर अ़मल करने के लिये किताब "**नेक बनने और बनाने के त़रीक़े**" से राहनुमाई ली जाए।

☞ मग़रिब के बयान के लिये किताब **नेक बनने और बनाने के त़रीक़े** से मदद ली जा सकती है।

नोट : ✿ जुमुआ़ / ज़ोहर ता मग़रिब या अ़स्र ता मग़रिब (जहां जैसी सूरत हो) भी ए'तिकाफ़ की तरकीब बनाई जा सकती है ✿ शह्र मुशावरत के निगरान, ह़ल्क़ा मुशावरत के निगरानों के सिपुर्द एक एक गाऊं कर दें और बा'द में पूछगछ भी रखें।

"यौमे ता'तील ए'तिकाफ़" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इस मदनी काम के ﴾14﴿ फ़ज़ाइल व फ़वाइद

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** में शह्र के अत्राफ़ (या'नी शह्र के नए और कमज़ोर अलाक़ों) और गाऊं दीहातों वग़ैरा में जा कर नेकी की दा'वत पेश की जाती है, सुन्नतें व आदाब सिखाए जाते हैं, दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल से उन को मुतआरिफ़ करवाया जाता है, आशिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने का मदनी ज़ेह्न दिया जाता है, **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** के चन्द फ़ज़ाइल व फ़वाइद येह हैं :

1 नफ़्ल ए'तिकाफ़ की सआदत पाने का ज़रीआ

इस मदनी काम में चूंकि इल्मे दीन सीखने सिखाने की निय्यत से मस्जिद में ठहरना होता है, लिहाज़ा शुरका इस्लामी भाई **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** की बरकत से नफ़्ल ए'तिकाफ़ का सवाब पाने की सआदत हासिल कर सकते हैं कि जिस के मुतअ़ल्लिक़ आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : मज़्हबे मुफ़्ता बेह पर (नफ़्ल) ए'तिकाफ़ के लिये रोज़ा शर्त नहीं और एक साअ़त का भी हो सकता है जब से (मस्जिद में) दाख़िल हो बाहर आने तक (के लिये) ए'तिकाफ़ की निय्यत कर ले, इन्तिज़ारे नमाज़ व अदाए नमाज़ के साथ ए'तिकाफ़ का भी सवाब पाएगा ।[1]

[1].....फ़तावा रज़विय्या, 5 / 674

2 नेकी की दा'वत की फ़ज़ीलत पाने का ज़रीआ़

यौमे ता'ती़ल ए'तिकाफ़ के ज़रीए़ शहर के कमज़ोर अ़लाक़ों और अत़राफ़ गाऊं वग़ैरा में जा कर नेकी की दा'वत पेश की जाती और इ़ल्मे दीन सिखाने की कोशिश की जाती है, जिस का फ़ाएदा न सिर्फ़ अपनी ज़ात बल्कि दूसरों को भी होता है, जिस के मुतअ़ल्लिक़ मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : तमाम इ़बादतों का फ़ाएदा ख़ुद अपने को (या'नी अपनी ज़ात को) होता है मगर तब्लीग़ का फ़ाएदा दूसरों को भी। **लाज़िम** (या'नी सिर्फ़ अपनी ज़ात को फ़ाएदा पहुंचाने वाले अ़मल) से **मुतअ़द्दी** (ऐसा अ़मल जो दूसरों को भी फ़ाएदा दे वोह) अफ़्ज़ल है।[1]

एक रिवायत में है कि जिस ने किसी को भलाई की दा'वत दी तो उसे उस भलाई की पैरवी करने वालों के बराबर सवाब मिलेगा और उन के अज्र में कोई कमी वाक़ेअ़ न होगी और जिस ने किसी को गुमराही की दा'वत दी उसे उस गुमराही की पैरवी करने वालों के बराबर गुनाह होगा और उन के गुनाहों में कमी न होगी।[2]

अ़ता कर दो मुझे इस्लाम की तब्लीग़ का जज़्बा　मैं बस देता फिरूं नेकी की दा'वत या रसूलल्लाह[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

3 फ़रोग़े इ़ल्मे दीन का बेहतरीन ज़रीआ़

यौमे ता'ती़ल ए'तिकाफ़ फ़रोग़े इ़ल्मे दीन का भी एक बहुत बड़ा ज़रीआ़ है, वोह यूं कि मस्जिद में जारी मदनी ह़ल्क़े में शुरका इस्लामी भाइयों

[1].....तफ़्सीरे नई़मी, पारह 4, आले इ़मरान, तह़्तुल आयत : 104, 4 / 80

[٢].........مسلم، کتاب العلم، باب من سن حسنة....الخ، ص۱۴۳۸، حدیث: ۲۶۷۴

[3].....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 333

को वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ के फ़राइज़ो वाजिबात के साथ साथ ढेरों सुन्नतें और आदाब सीखे सिखाए जाते हैं। बिलाशुबा इल्मे दीन सीखने सिखाने की भी खूब बरकतें हैं, हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से मन्क़ूल है कि जिस ने इल्म हासिल किया, उस पर अमल किया और दूसरों को सिखाया तो आस्मानों की सल्तनत में उसे अज़ीम कहा जाता है।(1)

4 मसाजिद की आबादकारी का ज़रीआ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जब किसी शख़्स को मस्जिद की ख़बरगीरी करते देखो तो उस के ईमान की गवाही देना।(2) मश्हूर मुफ़स्सिरे क़ुरआन, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मस्जिद की ख़बरगीरी की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं : (या'नी) हर नमाज़ के लिये वहां हाज़िर हो, वहां की सफ़ाई करे, मरम्मत का ख़याल रखे, जाइज़ ज़ीनत में मश्ग़ूल हो, वहां बैठ कर दीनी मसाइल बयान करे, वहां दर्स दे, येह सब मस्जिद की ख़बरगीरी में दाख़िल हैं। क्यूंकि येह चीज़ें ईमान की अलामतें हैं।(3) मगर अफ़्सोस ! ग़फ़्लत के इस दौर में जहां शहरों की मसाजिद में नमाज़ियों की ता'दाद न होने के बराबर है वहीं बा'ज़ गाऊं दीहात में नमाज़ पढ़ने वाला तो एक तरफ़ नमाज़ पढ़ाने वाला ही कोई नहीं।

١........الزھد للامام احمد بن حنبل، من مواعظ عیسی علیہ السلام، ص ۵۲، حدیث: ۳۳۰

٢........ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی حرمۃ الصلاۃ، ص ۶۱۷، حدیث: ۲۶۱۶

3.....मिरआतुल मनाजीह, बाब मस्जिदों और नमाज़ के मक़ामात का बयान, दूसरी फ़स्ल, 1 / 444

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी **मस्जिद भरो और मस्जिद बनाओ** तह़रीक है, लिहाज़ा **यौमे ता'ती़ल ए'तिकाफ़** भी इसी सिलसिले की एक कड़ी है और येह मदनी काम भी मसाजिद की आबादकारी का ही ज़रीआ़ है क्यूंकि जिन अ़लाक़ों में येह मदनी काम मज़बूत़ होगा वहां मसाजिद आबाद होंगी, नमाज़ियों की ता'दाद में इज़ाफ़ा होगा और दर्सो बयान, सुन्नतें और आदाब सीखने सिखाने का सिलसिला होगा तो इन की रौनक़ें बह़ाल होंगी।

मस्जिदें आबाद हों और सुन्नतें भी आ़म हों   फ़ैज़ का दरिया बहा दो सरवरा दाता पिया(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

5 गुनाहों से बचने का ज़रीआ़

यौमे ता'ती़ल ए'तिकाफ़ नेकियां कमाने और गुनाहों से बचने का भी एक ज़रीआ़ है, जितनी देर ए'तिकाफ़ की निय्यत से मस्जिद में रहेंगे, इल्मे दीन सीखने सिखाने और आख़िरत के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ भी मिलेगा। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाया करते कि (आख़िरत के मुआ़मलात में) लम्ह़ा भर ग़ौरो फ़िक्र करना सारी रात की (नफ़्ल) इ़बादत से बेहतर है।(2)

6 नेकियां कमाने का ज़रीआ़

प्यारे इस्लामी भाइयो! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद

1.....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 535

٢......الزھد لابی داود، من خبر ابی الدرداء، ص ١٩٢، حدیث: ٢٠٩

फ़रमाया : मर्द का जमाअ़त के साथ नमाज़ अदा करना, घर और बाज़ार में नमाज़ अदा करने से 25 दरजे अफ़्ज़ल है, क्यूंकि जब वोह अच्छे त़रीके़ से वुज़ू कर के मस्जिद जाता है और निय्यत सिर्फ़ नमाज़ की होती है तो उस के हर क़दम पर अल्लाह पाक उस का एक दरजा बुलन्द फ़रमाता और उस की एक ख़त़ा को मुआ़फ़ फ़रमाता है । जब वोह नमाज़ पढ़ लेता है तो जब तक अपनी जगह पर बैठा रहता है फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं और कहते हैं : या अल्लाह ! इस की मग़्फ़िरत फ़रमा, या अल्लाह ! इस पर रह़्म फ़रमा, लिहाज़ा जब तक तुम में से कोई नमाज़ के इन्तिज़ार में हो तो वोह नमाज़ ही में होता है ।(1)

यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़ गुनाहों से बचने का ज़रीआ़ ही नहीं नेकियां कमाने का भी ज़रीआ़ है, कि इस में मज़्कूरा ह़दीसे पाक पर ब ख़ूबी अ़मल करने का मौक़अ़ मिलता है, क्यूंकि इस में ए'तिकाफ़ की निय्यत से जब मस्जिद में ठहरा जाता है तो मस्जिद में ठहरने के सबब अज़ान देने या सुन कर जवाब देने, तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठे रहने का सवाब वग़ैरा पाने का मौक़अ़ भी मिलता है ।

7 नर्मी व आ़जिज़ी का सबब

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में शिर्कत की बरकत से तकब्बुर की काट होती और आ़जिज़ी पैदा होती है, क्यूंकि तकब्बुर की एक अ़लामत येह है कि मुतकब्बिर आदमी दूसरों की मुलाक़ात के लिये

[1] بخاری، کتاب الاذان، باب فضل صلاۃ الجماعۃ، ص ۲۲۴، حدیث: ۶۴۷

नहीं जाता, अगर्चे उस के जाने से दूसरे को दीनी फ़ाएदा ही क्यूं न हो।[1] यहां तक कि मुतकब्बिर शख़्स मरीज़ों और बीमारों के पास बैठने से भी भागता है।[2] लिहाज़ा **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** में जब ख़ुद चल कर दूसरों के पास जाएंगे तो यक़ीनन तकब्बुर की काट होगी और आ़जिज़ी पैदा होगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

उ़ज्ब व तकब्बुर और बचा हुब्बे जाह से *आए न पास तक रिया या रब्बे मुस्त़फ़ा*[3]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

8 सब्र पर अज्र

यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ में चूंकि लोगों के पास जा कर नेकी की दा'वत देने का सिलसिला होता है जिस में उन की त़रफ़ से बसा अवक़ात ऐसी बातें भी सुनना पड़ती हैं जो नफ़्स पर गिरां गुज़रती हैं मसलन किसी को नेकी की दा'वत पेश की जाए तो जवाब मिलता है : ❀ कुछ देर बा'द आइयेगा, अभी तो काम का वक़्त है ❀ अभी फ़ुर्सत नहीं किसी और के पास जाइये ❀ हम तो नमाज़ पढ़ते हैं, आप उन को दा'वत दें जो नहीं पढ़ते। चुनान्चे, इस क़िस्म की मुश्किलात पर हुस्ने अख़्लाक़ का मुज़ाहरा करते हुए सब्र कर के अज्रे अ़ज़ीम के मुस्तह़िक़ बनिये और दिल में येह तसव्वुर जमा लीजिये कि हमारे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर भी तक्लीफ़ें आईं, राह में कांटे बिछाए गए और त़ाइफ़ में पथ्थर बरसाए गए मगर फिर भी आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नेकी की दा'वत देते रहे।

[1]........ احیاء علوم الدین، کتاب ذم الکبر و العجب، بیان اخلاق المتواضعین...الخ، ۳/ ۴۳۴

[2]........ احیاء علوم الدین، کتاب ذم الکبر و العجب، بیان اخلاق المتواضعین...الخ، ۳/ ۴۳۵

[3].....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 132

तू कमर बस्ता रहा कर ख़िदमते इस्लाम पर   राहे मौला में जो आफ़त आए उस पर सब्र कर[1]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(9) फ़ारिग़ वक़्त को कार आमद बनाने का ज़रीआ

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी बेहद मुख़्तसर है, गुज़रा वक़्त ता क़ियामत वापस न आएगा और जो वक़्त मिल गया सो मिल गया, आयिन्दा मिलने की उम्मीद एक धोका है, **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी है : पांच चीज़ों को पांच से पहले ग़नीमत जानो (1) जवानी को बुढ़ापे से पहले (2) सिह़्ह़त को बीमारी से पहले (3) मालदारी को तंगदस्ती से पहले (4) फ़ुर्सत को मश्ग़ूलिय्यत से पहले और (5) ज़िन्दगी को मौत से पहले।[2] चुनान्चे, हफ़्तावार छुट्टी को सारा दिन सो कर या दोस्तों के साथ गपशप लगाने और फ़ुज़ूलिय्यात में सर्फ़ करने के बजाए अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** में गुज़ारिये कि आज अगर हम ने अपने क़ीमती लम्ह़ात को फ़ुज़ूलिय्यात में ज़ाएअ़ कर दिया तो आख़िरत में सिवाए ह़सरत व अफ़्सोस के कुछ हाथ न आएगा, जैसा कि ह़ुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : अहले जन्नत को किसी चीज़ का अफ़्सोस न होगा सिवाए उस घड़ी के जो (दुन्या में) **अल्लाह** पाक के ज़िक्र के बिग़ैर गुज़र गई।[3]

कुछ नेकियां कमा ले जल्द आख़िरत बना ले   कोई नहीं भरोसा ऐ भाई! ज़िन्दगी का[4]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

[1].....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 699

[٢]........مستدرک للحاکم، ۴۷-کتاب الرقاق، نعمتان مغبون فیهما...الخ، ۴۳۵/۵، حدیث: ۷۹۱۶

[٣]........معجم کبیر، بقیة المیم من اسمه معاذ، جبیر بن نفیر....الخ، ۸/۲۲۴، حدیث:۱۲۲۰۸

[4].....वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 178

10 जन्नत की बिशारत पाने का ज़रीआ

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में चूंकि शहर के अत़राफ़ और गाऊं दीहात में जा कर नेकी की दा'वत पेश करना होती है, लिहाज़ा आ़म मुसलमानों से ख़न्दा पेशानी से मुलाक़ात करने वग़ैरा का भी भरपूर मौक़अ़ मिलता है और एक रिवायत में अपने मुसलमान भाई से मिलने के लिये शहर से बाहर अत़राफ़ में जाने वाले के लिये जन्नत की बिशारत है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि दो आ़लम के मालिको मुख़्तार बिइज़्ने परवर दगार, मक्की मदनी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम को न बताऊं कि कौन कौन जन्नत में जाएगा ? हम ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! ज़रूर बताइये। इरशाद फ़रमाया : नबी जन्नत में जाएगा, सिद्दीक़ जन्नत में जाएगा और वोह शख़्स भी जो मह़ज़ **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये अपने किसी मुसलमान भाई से मिलने शहर के मुज़ाफ़ात में जाए।(1)

11 मदनी कामों की मज़बूती का ज़रीआ

मदनी मर्कज़ के दिये गए त़रीक़ए कार के मुत़ाबिक़ **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** पर पाबन्दी से अ़मल करेंगे तो न सिर्फ़ मदनी मक़्सद (या'नी **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ) के ह़ुसूल में कामयाबी मिलेगी बल्कि अत़राफ़ गाऊं में दीगर मदनी काम भी ख़ूब मज़बूत़ होंगे, मसलन वहां की मसाजिद में मदनी दर्स का सिलसिला शुरूअ़ होगा, सदाए मदीना की तरकीब बनाई जा सकेगी, मद्रसतुल

(1) معجم اوسط، من اسمه احمد، ۱/۴۷۲، حدیث: ۱۷۴۳

मदीना बालिग़ान की तरकीब भी मज़बूत होगी। मुख़्तलिफ़ मदनी कोर्सिज़ के लिये इस्लामी भाई तय्यार होंगे। **जामिअ़तुल मदीना** के दाख़िलों के लिये आ़शिक़ाने रसूल की एक अच्छी ता'दाद मिलेगी, हफ़्तावार इजतिमाअ़ व मदनी मुज़ाकरे में शिर्कत के लिये गाऊं दीहात से आने वाले लोगों की वज्ह से शुरकाए इजतिमाअ़ की ता'दाद में ख़ूब इज़ाफ़ा होगा। ए'तिकाफ़ के लिये कसीर आ़शिक़ाने रसूल मिलेंगे, इसी त़रह़ नए नए इस्लामी भाइयों पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उन को मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये तय्यार करने का मौक़अ़ मिलेगा वग़ैरा वग़ैरा।

(12) दा'वते इस्लामी की तश्हीर का ज़रीआ़

प्यारे इस्लामी भाइयो! यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ दा'वते इस्लामी की तश्हीर का भी एक ज़रीआ़ है, क्यूंकि जब शहर के कमज़ोर अ़लाक़ों या अत़राफ़ गाऊं में जा कर हफ़्तावार **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** की तरकीब बनाई जाएगी तो वहां के लोगों को **दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल** के क़रीब होने का मौक़अ़ मिलेगा और उन के लिये येह मदनी माहोल अपनाना आसान होगा।

(13) मदनी अ़तिय्यात के हुसूल का ज़रीआ़

गाऊं दीहात के लोग चूंकि आ़म तौर पर खेतीबाड़ी करते हैं और मुख़्तलिफ़ फ़स्लें काश्त करते रहते हैं, मगर इल्मे दीन से दूरी के सबब उ़श्र की अदाएगी के मुतअ़ल्लिक़ कुछ ज़ियादा मा'लूमात नहीं होतीं। लिहाज़ा **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** की बरकत से इन लोगों को उ़श्र की अदाएगी का ज़ेहन दे कर दा'वते इस्लामी के जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना व दा'वते

इस्लामी के जुम्ला **मदनी कामों** के लिये मुख़्तलिफ़ अजनास ह़ासिल की जा सकती हैं। जिस के लिये उ़श्र की अदाएगी के फ़ज़ाइल और न देने की वई़दों पर मुश्तमिल दर्सो बयान और मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ़ रिसाला **उ़श्र के अह़काम** को **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** के दौरान गाऊं दीहातों में तक़्सीम करने की तरकीब बनाई जा सकती है।

(14) मह़ब्बतों में इज़ाफ़े का ज़रीआ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** शह्‌री और दीही अ़लाके़ के रहने वालों के दरमियान मह़ब्बतों में इज़ाफ़े का भी एक बहुत बड़ा ज़रीआ़ है कि शहर की मसरूफ़ ज़िन्दगी में रहने वालों को एक दिन अत़राफ़ गाऊं के आ़शिक़ाने रसूल के साथ रहने का और दीहात के रहने वाले आ़शिक़ाने रसूल को अपने शह्‌री इस्लामी भाइयों से कुछ सीखने का भरपूर मौक़अ़ मिलेगा। बिलाशुबा येह एक ऐसा दीनी व मज़्हबी रिश्ता है जिस की फ़ज़ीलत के मुतअ़ल्लिक़ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि हु़ज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** करीम के ऐसे बन्दे भी हैं जिन का शुमार अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में होता है न शुहदा में, बल्कि अम्बियाए किराम व शुहदाए उ़ज़्ज़ाम ख़ुद ब रोज़े क़ियामत उन के मक़ामो मर्तबे और **अल्लाह** करीम से उन के क़ुर्ब पर रश्क करेंगे। एक दीहाती शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم येह कौन लोग होंगे ? इरशाद फ़रमाया : येह मुख़्तलिफ़ अ़लाक़ों के लोग होंगे और एक रिवायत[1] में है कि वोह मुख़्तलिफ़ क़बाइल से तअ़ल्लुक़ रखते होंगे, उन के

[1]........معجم کبیر، ۲/۳۸۲، حدیث:۳۳۵۷

दरमियान कोई ख़ूनी रिश्ता न होगा मगर वोह एक दूसरे से सिर्फ़ रिज़ाए इलाही की ख़ाति़र मह़ब्बत करते और तअ़ल्लुक़ रखते होंगे। बरोज़े क़ियामत अल्लाह करीम उन के लिये अपने (अ़र्श के) सामने नूर के मिम्बर रखने का हुक्म फ़रमाएगा और उन का ह़िसाब भी उन ही मिम्बरों पर फ़रमाएगा। लोग तो ख़ौफ़ज़दा होंगे लेकिन वोह बे ख़ौफ़ होंगे।(1) येही नहीं बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ाहिर बिन ह़राम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ दीहात के रहने वाले थे, वोह गाऊं से हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये हदिय्या लाते थे और जब वोह वापस जाना चाहते तो सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी उन्हें सामान देते थे, आप عَلَیْہِ السَّلَام फ़रमाते : ज़ाहिर हमारे दीहाती भाई हैं और हम ज़ाहिर के शहरी भाई हैं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन से बड़ी मह़ब्बत करते थे।(2)

मदनी मुज़ाकरों और मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों से माख़ूज़ यौमे ता'ती़ल ए'तिकाफ़ के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल

❀ **यौमे ता'ती़ल ए'तिकाफ़** की तरकीब मज़बूत़ बनाई जाए, इस से अत़राफ़ में मदनी काम मज़बूत़ होगा और उ़श्र इकठ्ठा करने का मौक़अ़ भी मिलेगा।(3)

[1]......تمہید الفرش فی الخصال الموجبۃ لظلال العرش، ص ۱۸

[2]......شرح السنہ، کتاب البر و الصلۃ، باب المزاح، ۷/۳۹۷، حدیث: ۳۶۰۴

[3].....बारह मदनी काम, स. 45

❀ तमाम मुबल्लिग़ीन बयानात करें और **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** की तरग़ीब दिला कर इस मदनी काम को कामयाब कराएं, इस में ज़िम्मेदारान की शिर्कत अहम किरदार अदा करेगी।[1]

❀ अत्राफ़ गाऊं में किसी ऐसे इस्लामी भाई को ज़िम्मेदारी दी जाए, जो मद्रसतुल मदीना बालिग़ान, **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़**, हफ़्तावार इजतिमाअ़ और हफ़्तावार मदनी मुज़ाकरे में गाऊं वालों की शिर्कत को यक़ीनी बनाए और मुख़्तलिफ़ गाऊं में जहां ह़ाजत हो खुद्दामुल मसाजिद के तआ़वुन से मसाजिद की ता'मीरात की तरकीब करे।[2]

❀ इजतिमाआ़त के लिये अत्राफ़ गाऊं जो हमारे मुल्क की 60 % से ज़ाइद आबादी है, इस पर खुसूसी तवज्जोह दी जाए।

❀ अत्राफ़ / गाऊं को ज़िम्नी तौर पर न लिया जाए बल्कि बा क़ाइदा इन को हदफ़ पर ले कर मदनी काम की तरकीब बनाई जाए।

❀ अत्राफ़ के दीहातों को बा क़ाइदा शहर के ह़ल्क़ों में तक़्सीम किया जाए। इस ह़ल्क़े वाले मुतअ़ल्लिक़ा गाऊं में हर हफ़्ते छुट्टी के दिन जाने की तरकीब बनाएं।

❀ अत्राफ़ गाऊं की मजलिस इस्लामी भाइयों को इजतिमाअ़ (हफ़्तावार इजतिमाअ़ / मदनी मुज़ाकरे) में लाने के इन्तिज़ामात, उन के साथ सफ़र और इजतिमाअ़ के बा'द मुसलसल उन से राबिता रखने की तरकीब करे।[3]

[1].....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, जुमादल ऊला 1427 हिजरी ब मुताबिक़ जून 2006 ईसवी
[2].....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, रजबुल मुरज्जब 1437 हिजरी ब मुताबिक़ 9 ता 13 अप्रेल 2016 ईसवी
[3].....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, शव्वालुल मुकर्रम 1429 हिजरी ब मुताबिक़ 5, 6 अक्तूबर 2008 ईसवी

❀ अत्राफ़ / गाऊं और कमज़ोर शहरों / अ़लाक़ों के लिये ज़िम्मेदारान खुसूसी वक़्त दें।

❀ निगराने काबीना मुख़्तलिफ़ शहरों (डिवीज़नों) का जदवल बना कर मजलिसे अत्राफ़ गाऊं के ज़रीए **किसान इजतिमाआ़त** में बयानात करें और दा'वते इस्लामी की ख़िदमात से आगाह कर के मज़ीद तआ़वुन का ज़ेह्न दें, नीज़ अ़मली तौर पर दा'वते इस्लामी के मदनी कामों में शुमूलिय्यत की तरग़ीब दिलाएं।

❀ मद्रसतुल मदीना और जामिअ़तुल मदीना के त़लबा, असातिज़ा व नाज़िमीन, मजलिसे अत्राफ़ गाऊं के साथ भरपूर तआ़वुन करें मगर पढ़ाई का जदवल मुतास्सिर न हो।

❀ मुतअ़ल्लिक़ा रुक्ने शूरा, मजलिसे अत्राफ़ गाऊं, इस शो'बे से मुतअ़ल्लिक़ तमाम तन्ज़ीमी मुआ़मलात इफ़्ता मक्तब में पेश कर के शरई रहनुमाई लें।(1)

❀ **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़**, मदनी क़ाफ़िला व मदनी इन्आ़मात के जदवल के मुत़ाबिक़ होना चाहिये।(2)

❀ दीहातों में जुमुआ़ के वक़्त मुमकिन हो तो मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी खुद राहे खुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल बयान कर के मौक़अ़ की मुनासबत से उ़श्र की भरपूर तरग़ीब दिलाएं।

❀ अत्राफ़ / दीहातों की मसाजिद में बयानात किये जाएं बा'द अज़ां मदनी कामों का तआ़रुफ़ पेश करें, अख़राजात की वज़ाहत करें और उ़श्र की तरकीब बनाएं।(3)

[1].....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, जुल क़ा'दतिल ह़राम 1429 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 4 ता 7 सितम्बर 2014 ईसवी
[2].....मदनी मुज़ाकरा मदनी फूल, रबीउ़ल अव्वल 1437 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 13 दिसम्बर 2015 ईसवी
[3].....मदनी मश्वरा मर्कज़ी मजलिसे शूरा, रबीउ़ल अव्वल 1427 हिजरी ब मुत़ाबिक़ 3 ता 8 अप्रेल 2006 ईसवी

यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ की मदनी बहार

प्यारे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त गुनाहों से बचने और नेकियों को आ़म करने के लिये मसाजिद में दर्सो बयान व हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ व दीगर मदनी कामों के साथ साथ शह्‌र के अत़राफ़ और गाऊं दीहातों में इ़ल्मे दीन आ़म करने के लिये हफ़्तावार छुट्टी वाले दिन **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** की तरकीब बनाई जाती है, इस मदनी काम की बरकत से बेशुमार लोगों को राहे हिदायत नसीब हुई, कल तक जो दीन की बुन्यादी मा'लूमात से नावाक़िफ़ थे फ़राइज़ उ़लूम भी सीखने सिखाने वाले बन गए, अ़मल के जज़्बे से आ़री लोग नमाज़ी व परहेज़गार बन गए, हुब्बे दुन्या में ग़र्क़ मह़ब्बते इलाही से सरशार और इ़श्क़े नबी के असीर हो गए। होटलों में घन्टों बैठ कर फ़िल्में ड्रामे देख कर ज़िन्दगी के क़ीमती लम्ह़ात को ज़ाएअ़ करने वाले मसाजिद में मो'तकिफ़ बनने लगे। आइये तरग़ीब के लिये **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** की एक मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये। चुनान्चे,

एक इस्लामी भाई का बयान है : आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में आने से क़ब्ल मैं मुआ़शरे के आ़म नौजवानों की त़रह़ ग़फ़्लत की ज़िन्दगी बसर कर रहा था और 1994 ईसवी में मेट्रिक के इम्तिह़ान के बा'द पढ़ाई छोड़ चुका था और कोई ख़ास काम काज भी न करता था, बल्कि स्कूल में दौराने ता'लीम बुरे दोस्तों की सोह़बत के सबब सुब्ह़ो शाम गाने बाजे सुनना मेरा इस क़दर मह़बूब मश्ग़ला बन चुका था कि मैं ने एक रेडियो भी ख़रीद लिया। फिर 1996 ईसवी में मेरी क़िस्मत

का सितारा यूं चमका कि एक मरतबा जुमुआ़ के मुबारक दिन सफ़ेद लिबास में मल्बूस सर पर सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए हुए चन्द इस्लामी भाई **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** के लिये हमारे गाऊं में तशरीफ़ लाए, उन में से एक इस्लामी भाई ने मुझे भी मह़ब्बत भरे अन्दाज़ से मस्जिद में आ कर ए'तिकाफ़ में शामिल होने की दा'वत दी, लिहाज़ा मैं भी अपने चन्द दोस्तों समेत उन के साथ शामिल हो गया और ख़ूब दिली राह़त नसीब हुई, वापस जाते हुए एक इस्लामी भाई ने हफ़्तावार इजतिमाअ़ की दा'वत दी तो हम ने अ़र्ज़ की : अगर याद रहा तो إِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़रूर शिर्कत करेंगे। जुमे'रात को जब मैं नमाज़े मग़रिब पढ़ने मस्जिद गया तो क़रीबी दुकानदार ने बताया कि कोई इमामे वाले इस्लामी भाई आप को हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शिर्कत की याद दिहानी करवाने आए थे, येह सुन कर मेरी ह़ैरत की इन्तिहा न रही कि येह इस्लामी भाई 2 किलो मीटर दूर से पैदल सफ़र कर के सिर्फ़ याद दिहानी के लिये आए थे ! और ख़ुशी भी बहुत हुई कि दा'वते इस्लामी वाले कितने अच्छे लोग हैं कि किसी दुन्यावी मक़्सद के लिये नहीं बल्कि फ़क़त़ इजतिमाअ़ की दा'वत देने आए थे। जब हम चार दोस्त हफ़्तावार इजतिमाअ़ में शरीक हुए तो वोह इस्लामी भाई ऐसे हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आए कि हम तो बस दा'वते इस्लामी के हो कर रह गए। मेरा तो गोया अन्दाज़े ज़िन्दगी ही बदल गया, नमाज़ों की पाबन्दी नसीब हुई, गानों की जगह ना'त शरीफ़ ने ले ली, बुरे दोस्तों की जगह मुबल्लिग़ीने दा'वते इस्लामी की सोहबत मुयस्सर आई। रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ में शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के मक्तूब की तरग़ीब से 12 दिन के लिये चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजाने की निय्यत की, फिर

ईदे मीलाद के बा'द पूरे माह के लिये रखने का ज़ेह्न बना और जब माहे मीलाद गुज़रा तो मुन्डवाने व कटवाने से शर्म आई और हमेशा के लिये रख ली। इस के बा'द 1996 ईसवी के इजतिमाअ़ में ह़ाज़िरी की सआ़दत मिली तो वापसी पर इ़मामा शरीफ़ भी सजा लिया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के प्यारे प्यारे मदनी माह़ोल की बरकत से न सिर्फ़ मेरी ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा हुवा बल्कि मेरा सारा घराना ही मदनी माह़ोल में रंग गया, मैं बहन भाइयों में अगर्चे सब से छोटा था मगर **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल और मुर्शिदे पाक की नज़्रे करम से वालिदा साह़िबा (मर्ह़ूमा) समेत सारा ख़ानदान **अ़त्तारी** हो गया। मेरे तीन भांजे मद्रसतुल मदीना से ह़िफ़्ज़े क़ुरआन की सआ़दत पा चुके हैं और एक अभी ह़िफ़्ज़ कर रहा है, उन में से एक मद्रसतुल मदीना में तदरीस कर रहा है जब कि दूसरा दर्से निज़ामी करने के बा'द मजलिस जामिअ़तुल मदीना में रुक्ने काबीना की ह़ैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत में मसरूफ़े अ़मल है, जब कि एक दर्से निज़ामी कर रहे हैं। इस के इ़लावा मेरी दो भांजियां भी फ़ारिग़ुत्तह़सील होने के बा'द जामिअ़तुल मदीना लिलबनात में तदरीस के फ़राइज़ सर अन्जाम दे रही हैं और ता दमे तह़रीर اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ख़ुद भी डिवीज़न मुशावरत के निगरान की ह़ैसिय्यत से मदनी कामों की धूमें मचाने की सआ़दत पा रहा हूं और इसे अपने मुर्शिद की नज़्र का फ़ैज़ान जानता हूं कि मुझे मदनी कामों के बिग़ैर किसी पल चैन नहीं आता, जिस दिन मदनी काम नहीं कर सकता अधूरा पन और मह़रूमी सी मह़सूस होती है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ चन्द सुवाल जवाब

सुवाल 1 **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** शह्र और अत्राफ़ में किस मजलिस के सिपुर्द है ?

जवाब **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** शह्र में **मजलिसे मदनी क़ाफ़िला** के सिपुर्द है।

सुवाल 2 मस्जिद इन्तिज़ामिया की त़रफ़ से **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** की इजाज़त न मिलने की सूरत में क्या तरकीब की जाए ?

जवाब اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ अक्सर आ़शिक़ाने रसूल उ़लमाए अहले सुन्नत दा'वते इस्लामी से बहुत प्यार करते, ताईद करते और तआ़वुन करते हैं, अगर कहीं किसी ग़लत़ फ़ह्मी की बिना पर कोई ऐसी तरकीब हो जाए तो मस्जिद के बाहर या क़रीब ही किसी घर या मद्रसे में तरकीब बनाई जा सकती है, मगर याद रखिये कभी भी किसी भी सुन्नी आ़लिम की शान में कोई गुस्ताख़ी करनी है न ईंट का जवाब पथ्थर से देना है, क्यूंकि दा'वते इस्लामी मह़ब्बतों को फैलाने वाली और नफ़रतों को मिटाने वाली तह़रीक है।

सुवाल 3 **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** वाला मदनी काम तन्ज़ीमी त़ौर पर किस मक़्सद के तह़त किया जाता है ?

जवाब **यौमे ता'तील ए'तिकाफ़** ही नहीं बल्कि बाक़ी तमाम मदनी कामों का बुन्यादी मक़्सद इस मदनी मक़्सद की तक्मील का ह़ुसूल है जो

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ ने हमें अ़ता फ़रमाया है या'नी **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ** नीज़ इस का एक मक़्सद येह भी है कि जो इस्लामी भाई रोज़ाना दा'वते इस्लामी के मदनी कामों को दो घन्टे नहीं दे सकते, वोह छुट्टी के दिन इस मदनी काम के ज़रीए़ इल्मे दीन सीखने सिखाने में मश्ग़ूल हो सकें और जिन को नेकी की दा'वत देनी है उन्हें भी छुट्टी के दिन बेहतर त़रीक़े से नेकी की दा'वत पहुंचाई जा सके, इस के इ़लावा शहर के तन्ज़ीमी त़ौर पर मदनी कामों में कमज़ोर अ़लाक़े या शहर के अत़राफ़ में बनने वाली नई कॉलोनीज़ और सोसाइटीज़ में, इसी त़रह़ नए आबाद होने वाले गाऊं दीहात में भी मदनी काम शुरूअ़ या मज़बूत़ किया जा सकता है।

सुवाल 4 **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में छुट्टी से मुराद जुमुआ़ / इतवार है या फिर हफ़्तावार किसी भी छुट्टी वाले दिन तरकीब बनाई जा सकती है?

जवाब जी हां अक्सर कहीं छुट्टी जुमुआ़ / इतवार के इ़लावा किसी और दिन होती है तो उसी दिन इस की तरकीब बनाई जा सकती है।

सुवाल 5 शहर के अत़राफ़ में ऐसी नई रिहाइशी कॉलोनियां जिन में मसाजिद नहीं, उन में **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** की तरकीब कहां की जाए?

जवाब शहर के अत़राफ़ में ऐसी नई रिहाइशी कॉलोनियां जिन में मसाजिद न हों तो वहां किसी भी अहले मह़ब्बत के घर, दुकान या कारख़ाने वग़ैरा में **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** की तरकीब की जा सकती है।

सुवाल 6 जामिअ़तुल मदीना के जो त़लबा **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में शिर्कत करना चाहें उन की कम अज़ कम उ़म्र कितनी होना ज़रूरी है ?

जवाब जामिअ़तुल मदीना के जो त़लबा **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में शिर्कत करना चाहें उन के लिये उ़म्र की कोई क़ैद नहीं, कम उ़म्र भी जा सकते हैं, क्यूंकि इस मदनी काम में रात क़ियाम नहीं किया जाता, बल्कि दिन ही में वापसी हो जाती है।

सुवाल 7 **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में ख़ैर ख़्वाही की तरकीब कर सकते हैं या नहीं, अगर करें तो कहां से ?

जवाब मक़ामी इस्लामी भाइयों से या किसी के घर से ख़ैर ख़्वाही की तरकीब कर सकते हैं।

सुवाल 8 **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** के मुक़र्ररा अवक़ात में मस्जिद में मह़फ़िल वग़ैरा की तरकीब हो तो इस सूरत में क्या किया जाए ?

जवाब इस में शिर्कत की जाए और आख़िर में मुलाक़ात कर के इनफ़िरादी कोशिश की तरकीब की जाए, जब कि बाक़ी वक़्त को तै शुदा जदवल के मुत़ाबिक़ ही गुज़ारा जाए।

सुवाल 9 **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में अगर जदवल के मुत़ाबिक़ वक़्त न गुज़ारा जाए तो क्या **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** वाले मदनी इन्आ़म पर अ़मल माना जाएगा या नहीं ?

जवाब **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** का एक जदवल है जो मदनी क़ाफ़िला मजलिस या अपने मुतअ़ल्लिक़ा निगरानों या कारकर्दगी ज़िम्मेदारान से ह़ासिल

किया जा सकता है इसी के मुत़ाबिक़ तरकीब होना चाहिये ताकि सीखने सिखाने का अ़मल ज़ियादा हो।

सुवाल 10 **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में जदवल के मुत़ाबिक़ तरकीब करने के बजाए फ़क़त़ उ़श्र इकठ्ठा करने के लिये मक़ामी इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात के लिये जाना कैसा ?

जवाब उ़श्र जम्अ़ करना यक़ीनन दा'वते इस्लामी का ही काम है, जिस के ज़रीए़ कसीर लोग एक इस्लामी फ़रीज़े से सुबुकदोश होते और कसीर सवाब पाते हैं। नीज़ दा'वते इस्लामी वाले भी अपने मदनी कामों में इस से फ़वाइद ह़ासिल करते हैं और इन की मुआ़वनत भी होती है। मगर चाहिये कि उ़श्र के वक़्त ही उ़श्र जम्अ़ किया जाए और **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** अपने जदवल के मुत़ाबिक़ ही हो।

सुवाल 11 **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में दा'वते इस्लामी के लिये उ़श्र इकठ्ठा करने की तरग़ीब दिलाना कैसा ?

जवाब **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** में दा'वते इस्लामी (के हर नेक और जाइज़ काम) के लिये उ़श्र इकठ्ठा करने की बयान में तरग़ीब दिलाई जा सकती है और ज़रूरतन पेना फ़्लेक्स भी लगाया जा सकता है।

सुवाल 12 गाऊं दीहात में रहने वाले इस्लामी भाई अपनी क़रीबी मस्जिद में ए'तिकाफ़ करें या फिर दूसरे गाऊं या अत़राफ़ की मस्जिद में **यौमे ता'त़ील ए'तिकाफ़** की तरकीब करें ?

जवाब निगरान जो सम्तें बनाए उस के मुताबिक़ तरकीब की जाए, निगरान ख़्वाह क़रीबी गाऊं का कहे या दूर के किसी गाऊं में जाने का, जहां भी भेजे वहां ही तरकीब की जाए।

सुवाल 13 **यौमे ता'ती़ल ए'तिकाफ़** में शहर के अत़राफ़ में कितनी मसाफ़त के गाऊं दीहात में जा सकते हैं, तन्ज़ीमी तौ़र पर इस की क्या ह़द है ?

जवाब **यौमे ता'ती़ल ए'तिकाफ़** में शहर वाले शहर में और गाऊं वाले गाऊं ही में जाएंगे, मगर निगराने काबीना या निगराने काबीनात या डिवीज़न मुशावरत के निगराने मदनी क़ाफ़िला मजलिस अगर किसी ह़ल्क़े या अ़लाक़े या किसी एक इस्लामी भाई की ड्यूटी ख़ुसूसी तौ़र पर किसी गाऊं में लगाए तो वोह मसाफ़त न देखे बल्कि अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ वहां पर सफ़र करे।

सुवाल 14 **यौमे ता'ती़ल ए'तिकाफ़** को क्या **ता'ती़ल ए'तिकाफ़** या फ़क़त़ **ए'तिकाफ़** कहा जा सकता है ?

जवाब इस्ति़लाह़ात को हमेशा दुरुस्त त़रीक़े से ही इस्ति'माल करना चाहिये।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मस्जिद भरो "तह़रीक"
. . . जारी रहेगी . . .
اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید	♣♣♣♣♣
کتاب	**مطبوعہ**
کنز الایمان	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ ۱۴۳۲ھ
تفسیر نعیمی	نعیمی کتب خانہ گجرات
الزھد للامام احمد	دار الحدیث القاھرہ ۱۴۲۵ھ
صحیح البخاری	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۸ھ
صحیح مسلم	دار الکتب العلمیہ بیروت 2008ء
الزھد لابی داود	دار المشکاۃ القاھرہ ۱۴۱۴ھ
سنن الترمذی	دار الکتب العلمیہ بیروت 2008ء
المعجم الکبیر	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2007ء
المعجم الاوسط	دار الفکر عمان ۱۴۲۰ھ
المستدرک علی الصحیحین	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۷ھ
شرح السنۃ	دار الفکر بیروت 2012ء
مرآۃ المناجیح	نعیمی کتب خانہ گجرات
السیرۃ النبویۃ لابن ھشام	دار الفجر مصر ۱۴۲۵ھ
حلیۃ الاولیاء	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۷ھ
الریاض النضرۃ	النوریۃ الرضویہ لاھور ۱۴۳۳ھ
الخصائص الکبریٰ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
مدارج النبوۃ	النوریۃ الرضویہ لاھور 1997ھ
شرح الزرقانی علی المواھب	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۷ھ
نفحۃ الرحمن فی مناقب مفتی مکۃ احمد زینی دحلان	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ ۱۴۲۱ھ
سیرتِ مصطفٰے	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
فیضانِ فاروق اعظم	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
احیاء علوم الدین	دار الکتب العلمیہ بیروت 2008ء
الحاوی للفتاوی	دار الکتاب العربی بیروت 2014ء
تمھید الفرش فی الخصال الموجبۃ لظلال العرش	المکتب الاسلامی
فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن لاہور
حدائقِ بخشش	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
وسائلِ بخشش (مرمّم)	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ
بارہ مدنی کام	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۳۶ھ

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	3 फ़रोग़े इल्मे दीन का बेहतरीन ज़रीआ	21
अस्लाफ़ और तब्लीग़े इल्मे दीन	1	4 मसाजिद की आबादकारी का ज़रीआ	22
अत्राफ़ गाऊं में नेकी की दा'वत देना कैसा ?	5	5 गुनाहों से बचने का ज़रीआ	23
		6 नेकियां कमाने का ज़रीआ	23
जिन्नों के क़बाइल में तब्लीग़	7	7 नर्मी व आजिज़ी का सबब	24
अत्राफ़ गाऊं में इशाअ़ते इल्मे दीन और सहाबए किराम	9	8 सब्र पर अज्र	25
बुज़ुर्गाने दीन और इशाअ़ते इल्मे दीन	12	9 फ़ारिग़ वक़्त को कार आमद बनाने का ज़रीआ	26
इशाअ़ते इल्म के लिये गाऊं दीहात में जाना कैसा ?	12	10 जन्नत की बिशारत पाने का ज़रीआ	27
		11 मदनी कामों की मज़्बूती का ज़रीआ	27
अत्राफ़ गाऊं और दा'वते इस्लामी	13	12 दा'वते इस्लामी की तश्हीर का ज़रीआ	28
यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ क्या है ?	14		
यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ के चन्द मदनी फूल	15	13 मदनी अ़तिय्यात के हुसूल का ज़रीआ	28
		14 महब्बतों में इज़ाफ़े का ज़रीआ	29
यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ का जदवल	16	मदनी मुज़ाकरों और मर्कज़ी मजलिसे शूरा के मदनी मश्वरों से माख़ूज़ यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ के मुतअ़ल्लिक़ मदनी फूल	30
"यौमे ता'तील ए'तिकाफ़" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से इस मदनी काम के 14 फ़ज़ाइलो फ़वाइद	20	यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ की मदनी बहार	33
1 नफ़्ल ए'तिकाफ़ की सआ़दत पाने का ज़रीआ	20	यौमे ता'तील ए'तिकाफ़ से मुतअ़ल्लिक़ चन्द सुवाल जवाब	36
2 नेकी की दा'वत की फ़ज़ीलत पाने का ज़रीआ	21	मआख़िज़ो मराजेअ़	41
		फ़ेहरिस्त	42

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमेरात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए़ मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

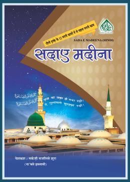

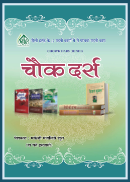

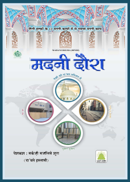

DAWAT-E-ISLAMI

0133178

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

❁ देहली	:-	मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली	011-23284560
❁ अहमदाबाद	:-	फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद, गुजरात	9327168200
❁ मुम्बई	:-	फ़ैज़ाने मदीना, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र	09022177997
❁ हैदराबाद	:-	मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना	(040) 2 45 72 786

E-mail : maktabadelhi@gmail.com / Website : dawateislamihind.net